पूज्यनीय श्री १०८ श्री गुरुदेव जी महाराज
आप के चरणों में दास का कोटी कोटी प्रणाम है
आगे समाचार यह है। सेवक बहुत दिनों से
आपकी सेवा में पत्र नहीं लिख सका आशा है
आप क्षमा करेंगे दो साल से सेवक ने जंगल
का ठेका हुआ है। साल में ९ मास जंगल में
रहता हूं और ३ मास सरदी के जंगल में आ
जाता हूं जंगल में कोहली ब्रादर के नाम से
फर्म है जो कि जंगल कि ठेकेदारी करते हैं
सेवक दो साल से उन्हीं के पास गुदामी का
काम कर रहा है। इसी कारण से आपकि सेवा में
पत्र नहीं लिख सका बाकी घर के बच्चे सभी
जंगल में हि रहते हैं। इस साल भी २ जंगल
ठ गढ़वाल में सरथल का और दूसरा गढ़वलैर
के ऊपर पनाता है। आशा है सेवक बैशाख के
पहले हफ्ते तक जंगल जावेगा इस साल गर्मी
के दिनों में कुछ दिनों के लिये आप आने कि
कृपा करें तो बहुत ठीक होगा जगह तो जंगल
में एकान्त स्थान होगा और इसी बहाने आप के
दर्शन भी कर सकेगा और
विचार आने [illegible] आशा है

सेवक को अन्दर चिट्ठी लिख कर सेवा
का मौका देवें. राम कुमार की सगाई
श्री आप की कृपा से दिवाली में हो गई है
आशा है जंगल से वापस आकर मंदिर में
इसकी शादी का काम भी हो जायेगा आगे
जो ईश्वर को मंजूर होगा बाकी आप अपनी
राजी खुशी का पता पत्र द्वारा अन्दर देते रहा
करें आप की कृपा होगी. सेवक के योग्य
को सेवा लिखें. बच्चों की ओर से प्रणाम

आपका सेवक

श्यामलाल

कमेटी अरोड़ा
बाजार [illegible] दिल्ली
19.3.65

Muzaffarnagar
Tele { gram- "HIND"
phone- [176 shop
15 Res.

** ॐ **

Office at Delhi
Tele { gram- "AMARPHAL"
phone- Coronation Hotel
24274, 23573, 25397
Laxmi & Vishnu 25197

Subject to Muzaffarnagar Jurisdiction.

DASWANDI RAM BANARSI DASS,

SUGAR & JAGGERY MERCHANTS & COMMISSION AGENTS,

NEW MANDI,
MUZAFFARNAGAR (N. Rly)

Ref. No. ....

Dated 19
3/9/53

پوجیہ شری گروجی مہاراج - دونوں ہاتھ جوڑ کر چرن بندنا -

میں نے آپ سے ٹھیک وعدہ کیا تھا - پہلے بھی اور اب بھی - مگر میں نے وچار کیا ہے

یہ دھندے میرے بس کے نہیں ہیں اور ان پر پوچھتا پھرے دیکھے کبھی کبھی کا

دھندا کبھی کبھا دھندا خواہ مخواہ دوسرے کو بھی تکلیف اور اشتری رکھا ہے

دیتا ہے - بلکہ میں آپ سے معافی مانگتا ہوں - میں کسی پرکار سے بھی

اس لائق نہیں - لہذا آپ اپنے چرنوں کی دھول اور گھر [illegible]

کا ارتھ [illegible] بخشش دیں - جس سے کلیان ہو اس میں آپکی کرپا ہوگی

اپدیشک آپ کا [illegible]

Ram [illegible]

سیوک رام ستکار -

ओम्

स्तुति पुष्पके - अवश्यं वसन्तांके मुद्रापयितव्यं
किंचित् समालोचयितव्यं

आचार्योऽस्तु त्वाम् भवो इति विदितैः श्रीमान् महत्तामहे
विप्रोच्चान्वय नीरधौ प्रकटित ज्योत्स्नाढ्य जैवातृकः
विद्या मार्मिक धौर्यधामे सदलं कर्मी सतां [illegible] सदा ।
(भगवद्दासानुकूलव्रतैः) त्यक्ताऽशेष परिग्रहोऽस्य ~~इतया [illegible]~~
साहित्ये कवि संसदे कवयतां पीयूष वर्षात्मगीः
मर्यादा निरतो जना दुपरत सौम्य स्वभावावृतः
(रागद्वेषपराङ्मुखः स्थिर मति) ~~प्रच्छन्नः स्मितितोऽप्रसन्न~~ स्वयं नित्य प्रसन्नाननः ।
ईदृक् श्री नरहरि भवोऽपि भाविनां भूत्यै भवे संभवेत् २

इति

अनुग्रहात् संस्कृत सत्कृतानां
सर्वाग्रणी संस्कृत संस्कृतस्य
परिष्कृतो (निष्कृत) ~~[illegible]~~ भारतीयं
श्री तेजभानो [illegible]

पहला मोड़

अन्तर्देशीय पत्र

इस पत्र के अन्दर कुछ न रखिये

भेजने वाले का नाम और पता :-

तीसरा मोड़



दूसरा मोड़

ॐ

चण्डीगढ़

ता. ८-२-५४

मान्यवर श्री गोविन्द जी

जय शङ्कर

आप की भेजी हुई 'आत्म विलास' पुस्तक मुझे मिल गई थी। आप की इस ~~कृपा~~ कृपा का मैं हृदय से धन्यवाद करता हूँ। महात्मा पुरुषों का संग अथवा कोई सद्‌ग्रन्थ भाग्य से ही मिला करता है। ~~मैं~~ आप ने पुस्तक भेज कर बड़ा उपकार किया।

मैं श्री कृष्ण दास जी का पुत्र हूँ। मेरे पिता जी जालंधर में बैंक में काम करते हैं तथा वह धार्मिक वृत्ति के पुरुष हैं। उन का पुत्र होने के कारण ही आप समझ लें ~~मुझे~~ मेरी मनोवृत्तियां भी उन जैसी ही हैं। मेरे पिता जी श्री आचार्य जी को ~~[illegible]~~ १५ वर्ष से जानते हैं। अभी १० १२ मास बीते की स्वामी जी हमारे घर पधारे थे और कुछ समय हमारे साथ रहे थे। अब पिता जी को स्वामी जी का पत्र आया था उस समय वह बम्बई चले गये थे (कोई दो मास व्यतीत गये)

मेरे मन में एक शंका है और मैं उस का निवारण करना चाहता हूँ। सो उस ~~शंका~~ शंका का समाधान करने के लिये ही मैं आप से स्वामी जी का पता पूछता हूँ। यदि आप स्वामी जी को इतना भी लिख दें की श्रीकृष्ण जी का पुत्र जगदीश आप से एक शंका का समाधान करना चाहता है तो वह कभी भी आप को अपना पता मुझे लिख देने से न रोकें जे।

वैसे तो मेरे पिता जी भी स्वामी जी का पता मुझे बता सकते हैं पर कई कारण वश मैं इस विषय ~~में~~ में उन्हें नहीं लिखना चाहता। वह समझें जे की मैं ठीक प्रकार से ~~[illegible]~~ अपना पढ़ने का काम नहीं कर रहा हूँ और ~~इधर उधर~~ दूसरे

यह बात मैं यह शायद पिता जी के
सामने नहीं रखना चाहता।
सो यदि आप को श्री स्वामी
जी का पता लग जाये तो उन की
आज्ञा से आप मुझे उन का ~~पता~~ पता
मुझे भेज दें।
(मैं बी.ए. करने के पश्चात
यहां पर ~~इ~~ इन्जनीरिंग पढ़ने के
लिये पंजाब कालेज में आया हुआ
हूं)।
~~मुझे~~ मुझे यद्यपि हिन्दी कठिन
से कठिन भी समझ में तो आ जाती
है पर लिखते हुये कई अशुद्धियां
रह जाती हैं, क्षमा करें।
तथा और यदि मेरे योग्य
कोई सेवा हो तो लिखें।

आप का दास
जगदीश चन्द्र
फर्स्ट ईयर स्टूडेन्ट
कमरा नं० ६२
पंजाब इन्जनीयरिंग कालेज
चंडीगढ़

अन्तर्देशीय पत्र

इस पत्र के अन्दर कुछ न रखिये



8/2/54

श्री गोविन्द जी मिश्र
चौकर्जा
भरतपुर
[illegible]

पहला मोड़

दूसरा मोड़

भेजने वाले का नाम और पता :-
Jagdish Chander
1st Year
Engineering College
Chandigarh.



पहले यहां काट कर खोलिये

॥ श्री: ॥

पूज्य आचार्यपाद

सादर प्रणाम।

कल ही श्री बलभद्रनाथ जी से आपके विषय में पता चला।

पूर्व एक बार पता चला था कि आप दिल्ली में हैं तो वहां पहुँचा था। बहुत ढूँढा। [illegible] पत्र लिख कर पता किया। मैं आप से बहुत मिलना चाहता था।

बहुत हैरान रहा। अभी भी मुश्किल [illegible] नहीं। इधर आया हूँ। अब आप की प्रतीक्षा है।

यथासमय शीघ्र पधारने की कृपा कीजिएगा। यहां आकर मेरा दिल नहीं लग रहा था। अब आप को देखने से कुछ बल है

विनीत!

वि. रामवासिष्ठः

Add! V. Ram Vasist
c/o Lt. Col. Chain Singh
SS and A Board
Srinagar
(Kashmir)

श्रीनगर

अन्तर्देशीय पत्र
INLAND LETTER



सेवा में श्री जी
c/o Shri Nityananda Datta,
G.491, Shrinivasa Puri
New Delhi — 14.

पहला मोड़ First fold

तीसरा मोड़ Third fold

भेजने वाले का नाम और पता :— Sender's name and address :—

25/7/67

श्रीराम



इस पत्र के अन्दर कुछ न रखिये NO ENCLOSURES ALLOWED

684



O LF RUPAR I SOHLANWALE SWAMIJEE CARE BHAWANISHANKER TRIVEDI JAIN LIBRARY NEAR SUBZIMANDI GHANTAGHAR DELHI

KINDLY MEET ON DELHI STATION KALKAMAIL 3 RD THURSDAY MORNING-----

SOHANLAL-------

COPIED "KHANNA" AT 14/20----

Madan Gopal Madan Mohan

KARYANA MERCHANTS & COMMISSION AGENTS
Kanak Mandi, Gali Post Office, JAMMU TAWI.
मदन गोपाल मदन मोहन, कनक मण्डी, जम्मू तवी ।
مدن گوپال مدن موہن کمیشن ایجنٹس گندم منڈی جموں

Ref. No. ....

Dated 8. 11. 72

पूज्यपाद श्री श्री १०८ श्री गुरुदेव जी महाराज
आप के चरणों में सादर प्रणाम हो
देहली से आती समय सेवक आप के दर्शन और सत
संग लेने के लिये आप से मिला चाहता हूँ वाकी आप
कृपा कर के बता देवें कि जम्मू में आप के कब
दर्शन होंगे आज कल काशी // घर में आप की
कृपा से है कृपा कर के दर्शन जरूर देवें
क्योंकि सेवक का // उद्धार आप ने करना
है और कोई सेवक के लिये काम करना हो तो
लिखियें

आपका सेवक
श्यामलाल

आयुर्वेदाचार्य

ॐ

क. पं. श्रीकण्ठदत्त नन्दकिशोर शर्मा वैद्य वाचस्पति

अनेक स्वर्ण पदक प्राप्त।

अध्यक्ष :- दत्त औषधालय ज्वालामुखी

जिला कांगड़ा (पंजाब)

र. नं० ✗ ...... तिथि १८ मार्गशीर्ष २०१६

श्री माननीय-परमपूज्य-परम पवित्र-परमस्मरण प्रातः-
स्मरणीय ~~[illegible]~~ मेरे लिये अविस्मरणीय तथा स्वप्नमें भी [illegible]
श्रद्धेय श्री आचार्य चरणों में दास नन्दकिशोर के
सांजलि तथा सस्नेह प्रणाम स्वीकार हों. आपकी सस्नेह
कृपादृष्टि से मैं कुशल पूर्वक हूं और आप भी कुशलपूर्वक ही
होंगे। श्री मिश्र जी का पत्र मिला था. आपको जालंधर
से वापिस लौटना पड़ा - इसका एक कारण तो उपल
वृष्टि ही होगा - परन्तु मेरी दृष्टि में मेरा मंदभाग्य - कर्मदोष -
मेरा आलस्य - मार्ग में स्नेहबंधनकी दुर्बलता ही प्रधान कारण है
अथवा ईश्वरेच्छा ही ऐसी हो क्योंकि "यमेवैष वृणुते तेन लभ्यः"
परन्तु इन बातों से तो शान्ति नहीं मिल सकती। इसलिये
जैसा भी उचित हो करें। आपकी असीम कृपादृष्टि है मुझे तो
इतने में भी संतोष है और आपका वरद हस्त होते हुए भी मैं
खाली रहा - तृष्णातुर कुंवें पर जाकर भी प्यासा [illegible]
यही दुःख है। मैं तो आपकी प्रतीक्षा में प्रथम आपकी [illegible]
इसलिये [illegible] एक दिन

मुझे करदेने के लिये जो उचित होगा आप करेंगे ही।
आपका नन्द दास:
नन्दकिशोर।

श्री हरि शरणम्

आदरणीय पूज्य महाराज जी

सादर चरण स्पर्श एवं हरिः शरणम्

मानसिक प्रणाम स्वीकृत हो, अत्यंत दुःख है कि
आपकी आज्ञा उल्लंघन कर रहा हूँ, कारण मान[illegible]
अशांति है, पारिवारिक सदस्यों के लिये जाप संक[illegible]
एवं नमस्कार - विशेष आपके दर्शन होने प[illegible]
सदैव के लिये चरण-स्पर्शी बालक

[illegible]

माजरा
17.12.67

परमादरणीय

गुरुदेव

सादर प्रणाम

मैं एक संत आत्मा हूँ - ऐसी स्थिती में फंसा हूँ कि कुछ समझ में नहीं आ रहा।

उठना चाहता हूँ - परन्तु परिस्थितियां अनुकूल नहीं किसी ने सलाह दी कि आपसे दीक्षा लें सब मुसीबत टल जावेंगी

सो करबद्ध प्रार्थना है कि दीक्षा दे उत्थान करें

आपका अपना

हरीश.

श्री श्री 1008 स्वामी नारायणानन्दजी
महाराज
श्री कृष्ण कुटीर
उत्तरकाशी

श्रीनयनादेवीजी.
19.10.1977

सेवामें,

परम पूजनीय श्री 1008 स्वामीजी महाराजजी

सादर वन्दे, जयतु नयने

मैं बड़े दिनों से प्रतीक्षा में हूँ, परन्तु आप ऐसे गुप्त हुए कि विशेष प्रयत्न करने पर भी आपका साक्षात्कार नहीं हो सका. इतना अवश्य पता मिलता रहा कि आप शिमला में हैं सोलन में हैं परन्तु भाग्य की विडम्बना समझिये, आपकी महान् कृपा हुई. जो मुझ जैसे तुच्छ व्यक्ति को भी स्मरण किया. ऐसे यह अत्यन्त अनुगृहीत होगा कि मैं आपको कोई उपलब्ध हूँ। परन्तु [illegible] आपकी प्रतीक्षा में हो रहे हैं। कि आप यहाँ पधार कर हमलोगों को कृतार्थ करते हुए माँ के श्री चरणों में उपस्थित हों।

और दूसरे सुपुत्र श्री आनन्द प्रसाद शास्त्रीजी ने श्रीनयना आदि भवानी माँ की संक्षिप्त [illegible] हिमालय की महारानी [illegible] और स्वरूप की [illegible] एक छोटी सी पुस्तक लिखी है. जिसे आपसे परामर्श करना मैं भेज रहा हूँ। इस सम्बन्ध में समझिये कि आपका अत्यन्त आवश्यक था. परन्तु दुर्भाग्य पता नहीं मिल सका. अतः सविनय प्रार्थना है कि वह पुस्तक को पढ़ने के उपरान्त जो-जो त्रुटियाँ प्रतीत हों, उन्हें अवगत कराने की अवश्य कृपा कीजिये। और जो आवश्यक इस सम्बन्ध में और कुछ लिखना जरूरी पत्र में प्रेषित करने की [illegible] उसे भी [illegible] लेख द्वारा [illegible] कीजिये। ऐसे आपके ही शिष्य पं. [illegible] ने [illegible] संशोधन करके [illegible] यह पुस्तिका का [illegible] मैं यह आपका [illegible] [illegible] सहायतार्थ की है [illegible]

आशीर्वाद समान्तर हूँ। चिरकाल से मैं इस बात पर
और प्रयत्न कर रहा हूँ। कि बच्चों को विद्या संस्कार
वाले प्रकार करवा सकूँ। परन्तु इस देश में तो कोई ऐसा
व्यक्ति नहीं जिससे यह काम करवाया जा सके। हमारे ~~[illegible]~~
यहाँ तो दोनों पहलों से पूजा कर विचार है और विशेष के
बच्चे कमरे ही पड़े हैं। अत: आपकी कृपा के बिना
यह कार्य होना असम्भव प्रतीत हो रहा है। बाकी सारी
बात तो आपका साक्षात्कार होने पर ही निवेदन करूँगा।
इस समय तो आप माँ के अत्यन्त समीप
पधारे हैं यदि माँ कृपा करें और आप जैसे महात्मा
के दर्शनों का हम जैसों को लाभ हो सके।

दर्शनाभिलाषी
हरिराम शर्मा।
श्री [illegible] देवीजी
जि० बिलासपुर
(१६०७०)

ॐ

Grams : Gita. Phone : 30.

THE GITA PRESS,

Ref. No. ______ Gorakhpur ______ 194

23-9-47

[illegible]

श्रीहरिः शरणम्

[illegible] बजरंगलाल,

श्री [illegible] को उत्तर लिख दिया
[illegible]
22/9

श्री [illegible]जी इस पुस्तक को छपाना (नहीं दे सकेंगे) चाहते हैं। वे (शायद) प्रकाशक दोनों [illegible] (नहीं छपाना) नहीं छपाना चाहते हो सके तो। (ये लिख दें। कि पुस्तक)

उनसे कह दें [illegible] लिखवा देना चाहिये

न सके तो पुस्तक लौटा देनी चाहिये

उनका Reminder भी आया

है

[illegible]

रोपड़
29-3-67

श्री युत मान्यवर ज्योतिषाचार्य जी

सादर नमस्कार।

स्वामी जी द्वारा प्रेषित ये पुस्तकें अमृतसर के विभिन्न विद्वानों में वितरण कर दी गई हैं। उन के हस्ताक्षर भी ले लिए हैं, वह आप को भेज रहा हूँ। कृपया स्वामी जी को सूचित कर दें और जब कभी वे आप को मिलें, सारा ब्यौरा दिग्दर्शित करा दें।

शेष भगवत्कृपा, योग्य सेवा सूचित करें।

विनीत

विश्वेश्वर नाथ भल्ला I.A

रोपड़

~~Appeared~~ n.c.

पं: रूप लाल शर्मा शास्त्री

रूपलाल शर्मा शास्त्री

पं: देव राज शास्त्री

देवराज शास्त्री

नोट

हस्ताक्षर

१- श्री मायाधारी जी शास्त्री

२- श्री ज्ञानचन्द जी जोशी [illegible] ज्ञानचन्द जोशी 26.2.67

३- श्री देवी दत्त जी शास्त्री देवी दत्त 21-2-67

४. " लोकमान्य जी शास्त्री
(आगरा मण्डल)

५- " दीवानचन्द जी शास्त्री [illegible]

६. " अमरनाथ जी शास्त्री [illegible] अमरनाथ

७ " शिवनारायण जी शास्त्री [illegible]वनारायण शास्त्री

८ " सदाराम जी शास्त्री [illegible]दाराम

९ " परमेश्वरी दत्त जी शास्त्री

ख

B

भारतीय डाक  तार विभाग

INDIAN POSTS AND TELEGRAPHS DEPARTMENT

C 15

0 1500

ब संख्या/B. No. ....

प्राप्ति का समय/Received at ... 16 ...	भेजने का समय/Sent at	परिपथ संख्या Circuit Number	तारीख मोहर Date Stamp
किससे/From	किसको/To		
किसके द्वारा/By 1655	किसके द्वारा/By		

A3 New Delhi [illegible] 13 34

Hari Ram Sharma
Retired D.S.P. only
Savadapurkar intimate telegraphic
to Shri Jee Swami Ji Maharaj
Reaching Delhi 28th ~~[illegible]~~
evening and Leaving for
Kurukshetra on 29th

टिप्पणी :—समय को स्पष्ट रूप से ठीक-ठीक भरिए। तार मनीआर्डरों, प्राथमिकता तथा जवाबी परियात के मामले में पूरे हस्ताक्षर करें।

Note :– Enter Time neatly and correctly. Sign in full in T. M. Or. Primary and Reply paid Traffic.

~~[illegible]~~ morning Letter

17041 P & T—Govt. Press, Chd. [287/69(MT)]

Posted = Shiv Raj Bhardwaj

दवाई खाना D/.................196

वैद्य बाबु राम भाबु जैन रजिस्टर्ड प्रैक्टीशनर

नं० ७१४१ कोतवाली बाज़ार, अम्बाला शहर

Vaid BABOO RAM BHABOO JAIN

Registered Practitioner

No. 7141 Kotwali Bazar, Ambala City

हमारे यहां हर किसम हर बीमारी की दवाई तैयार की जाती है हर चीज़ मोती अम्बर केसर, कस्तूरी, शुद्ध मिलती है।
सोना भस्म, अभरक भस्म, चाँदी भस्म हर तरह के रस तैयार मिलते हैं।

ਹਮਾਰੇ ਯਹਾਂ ਹਰ ਕਿਸਮ ਹਰ ਬੀਮਾਰੀ ਕੀ ਦਵਾਈ ਤਯਾਰ ਕੀ ਜਾਤੀ ਹੈ, ਹਰ ਚੀਜ਼ ਮੋਤੀ, ਅੰਬਰ, ਕੇਸਰ, ਕਸਤੂਰੀ, ਸ਼ੁਧ ਮਿਲਤੀ ਹੈ।
ਸੋਨਾ ਭਸਮ, ਅਭਰਕ ਭਸਮ, ਚਾਂਦੀ ਭਸਮ, ਹਰ ਤਰਹ ਕੇ ਰਸ ਤਯਾਰ ਮਿਲਤੇ ਹੈਂ।

ओ

परम पुज्य पद स्वामी जी
गुरु जी महाराज परम परम परब्रह्म
नाम मु कारम आपको कहें आप
को तुम्म साकार न अपकार न
कहे जो क बातस लागे होने
की वजह से। नर आकार या।
। नर गुन अरगुन की परतीत
होते हैं। जिस ने आपने अन्धकार
ते दबो लीया था जो धाम को जाकर
ही बजात पालन ना होने का कारन
बनी जो हो इस सफ्लो पर का सत
परगट हुई जावया के दनाइ जल्द
से जल्द के से पोहच्याइ जावे
अगर जै जै राम के हाथ ही पौंहच
जाते या आर कया किया भी जाये

ही सकल से हरकत होते होते हुक्म सामने आया
जिसाटे ये आप चान ही चान हो
किरपा नीकी किरपा नीकी किरपा नीकी
किरतार [illegible] नमामी मम

ACHHRURAM KALKHOF & CO.
AK < shellac > PRIVATE LTD.

From : Murli | To : Ballia

Our Ref. : | Date : 27/4/71

परम पूज्य स्वामी जी

सादर प्रणाम

आप को कल भी एक पत्र लिखा था आशा है मिला होगा. Balia से आने का एक और सीधा रास्ता पता है कि पटना वह है पटना से रात में 10 बजे के करीब एक ट्रेन रांची के लिये चलती है जो कि सीधी अगले दिन सवेरे 8.30 बजे रांची पहुंचती है। आप कृपया अपने प्रोग्राम के बारे में तुरन्त सूचित करें. आप का समाचार आने से मैं अपने सहायक को तुरन्त आप के पास भेज दूँगा.

श्री आइत जी को सादर प्रणाम

आप का
रोशनलाल

श्री

भरतपुर
6-1-77

अनन्त श्री "श्री" जी महाराज
के पुनीत पाद पद्मों में
दासानुदास ओमप्रकाश के प्रणाम ज्ञात हो।

मैं काफी दिनों से आपको पत्र लिखने की सोच रहा था लेकिन आप के समाचार आने वालों से मालूम पड़ ही जाते हैं लेकिन कुछ समय पहले अनायास ही आप की याद बहुत जोर से आने लगी, अतः मैंने यह निश्चय किया कि आज पत्र लिख ही दूं। वैसे चिरकाल से आपके स्वास्थ्य के समाचार प्राप्त नहीं हुये। श्री गिरिजाशरण जी द्वारा भेजे पञ्चांग अभी अभी प्राप्त हुये हैं। उनमें आपके अस्वस्थता के समाचार पढ़कर चिन्ता हुयी है। कृपया अतिशीघ्र कुशल समाचार दिलाये। सर्दी यहां पर भी अच्छी खासी पड़ रही है।

श्री पं. रमानन्द जी सारस्वत आपसे श्री मिलकर श्री मन्दाक्रान्ता स्तोत्रम की छपाई की स्वीकृति ले गये होंगे। उन्होंने पहले दिसम्बर में ही छपने की बात लिखी थी सो छप गया हो तो कुछ प्रतियां यहां भेजने की कृपा करें। श्री गिरिजाशरण जी के [illegible] लिख भेजें, कल श्री रघुनाथ जी पधारे थे वे

श्री परशुराम पूजन पद्धति दे गये हैं जल्दी ही प्रेस से दे दी जावेगी,

श्री धर्मेश्वर जी का स्वास्थ्य अब ठीक हो रहा है पथ्य मिल गया है। श्री दुर्गा जी का स्वास्थ्य श्री रघुनाथ जी कुछ नरम बतलाते थे।

पूज्य श्री लाला जी का स्वास्थ्य कुछ ठीक है आपके लिए साष्टांग प्रणाम कह रहे हैं यहां से सभी का आपको सादर जयशंकर ज्ञात हो। गत परसों श्री छोटेलाल जी भी आये थे वे प्रणाम कह गये हैं, श्री भानु पं. दुर्गादत्त जी, श्री गिरिजाशरण जी श्री बाबू हरिशंकर जी, लाला सियाराम जी आदि सभी प्रेमियों को यथोचित जयशंकर ज्ञात हो। अभी मेरे विभागीय परीक्षा का फल नहीं आया है शायद इस माह के अन्तिम सप्ताह या फरवरी के प्रथम सप्ताह तक अवश्य आ जावेगा,

श्री सौ. शान्ती जी, सौ. उमा जी, सेठानी गिरिजाशरण जी एवं बाबूजी, काका-पप्पू एवं श्री पं. कालीचरन जी व श्री सौ. शारदा जी व लाली, बौबी आदि सभी को समीकार यथोचित जयशंकर मालूम हो।

[illegible] सम्भवतः तार देवी कान्ति [illegible] हो गयी, उन्होंने तार दे दिया है।

यहां तो के श्री पट्टाभिराम शास्त्री जी का
भारत पर विकृत कर गयी है। उन की राय
में उन्हें पागल खाने दाखिल कराने की है
श्री धरणीधर जी का पत्र आज आया है उन्होंने
आप को प्रणाम लिखा है ~~सम्भवतः~~ सम्भवतः
वहां भी पत्र पहुंचे। श्री धर्मेश्वर जी ने कवच
पाठ आरम्भ ~~कर~~ आपके पत्र मिलते ही कर
दिया है पूज्य श्री कैलाश जी एवं उनकी धर्मपत्नी
जी भी आपको जयशंकर की कहते हैं। पूज्यश्री
ताऊजी की आज्ञा से विशेष समाचार यह है कि
दिनांक ५-१२-६६ को प्रातः १० बजे मेरी श्री-
धर्मपत्नी महोदया ने अपनी वाम कुक्षि से
पुत्री को जन्म दिया है यह एक डिग्री और
आ गयी है। कृपया नामकरण करदें।
शेष कुशल है कुशलता का समाचार शीघ्रातिशीघ्र
भिजवाने की कृपा करें। श्री लखन जी
का इन दिनों कोई पत्र नहीं आया है।

आपका दासानुदास
ओमप्रकाश

यहाँ पर काटिए ← TO OPEN CUT HERE

अन्तर्देशीय पत्र कार्ड
INLAND LETTER CARD

भरतपुर
6/1/77



To श्री अनन्त श्री "श्री" जी महाराज
द्वारा श्री पं. द्वारकादत्त जी शर्मा
ए-72 जनता कालोनी
अमृतेश्वर मार्ग जयपुर
जयपुर (राजस्थान)
JAIPUR पिन PIN

पहला मोड़ FIRST FOLD

दूसरा मोड़ SECOND FOLD

तीसरा मोड़ THIRD FOLD

इस पत्र के भीतर कुछ न रखिए NO ENCLOSURES ALLOWED

प्रेषक का नाम और पता :— SENDER'S NAME AND ADDRESS :—

O Sharma
Bharatpur
3 ...

पिन PIN

श्री

भरतपुर
14-2-66

अनन्त श्री "श्री जी" महाराज के
पूज्य पादों में दासानुदास ओमप्रकाश का
कोटि कोटि साष्टांग प्रणाम ज्ञात हो।

आपके सकुशल पहुंचने के समाचार हमें विगत दिनों में मिल चुके, पत्रोत्तर में विलम्ब हो गया इसके लिये हम क्षमा प्रार्थी हैं,

यहां पर सभी कुशल से हैं। पूज्यश्री ताऊजी का भी स्वास्थ्य ठीक है। ताऊजी दिनांक 12.2.66 को एक शिव प्रतिष्ठा कराने को लिये चले गये हैं। नदबई के पास खांगरी गांव है वहां गये हुये हैं, वहां से 16.2.66 को वापिस आयेंगे।

पूज्य श्री ताऊजी को साष्टांग प्रणाम ज्ञात हो एवं मुरारजी भी आपको प्रणाम कहते हैं। अभी मेरा रिजल्ट नहीं निकला है।

पट्टाभिराम शास्त्री जी को एवं छोटे लाल जी को भी साष्टांग प्रणाम ज्ञात हो।

श्री कैलाश जी एवं उनकी धर्मपत्नी भी आपको प्रणाम कहते हैं।

श्री धर्मेश्वर जी भी आपको जयशंकर की कहते हैं इनका भी स्वास्थ्य इस समय ठीक है।

पूज्य श्री ताऊजी की वहां से मिलने वालों को जयशंकर की ज्ञात हो।

आप की खांसी एवं जुकाम में तो पर्याप्त लाभ हो होगा। आप अपने स्वास्थ्य के समाचार शीघ्र दे दिया करें जिससे हमें आपकी कुशलता एवं स्वास्थ्य के समाचारों को मिलने से सन्तोष मिले शेष सभी ठीक है।

त्रुटियों को क्षमा करते कृपा करें। मेरा भी सभी को जयशंकर ज्ञात हो

पत्रोत्तर शीघ्र देना

आपका दासानुदास
ओमप्रकाश शर्मा
तारघर
भरतपुर
(रा०)

अन्तर्देशीय पत्र कार्ड
INLAND LETTER CARD



सेवा में,

श्रीमान् डा "श्रीजी" महाराज
द्वारा रतनलाल जी अग्रवाल
10 चर्चलैन मोगल
नई दिल्ली - 14

पिन PIN
NEW DELHI 14

तीसरा मोड़ THIRD FOLD

पहला मोड़ FIRST FOLD

दूसरा मोड़ SECOND FOLD

इस पत्र के भीतर कुछ न रखिए NO ENCLOSURES ALLOWED

प्रेषक का नाम और पता :— SENDER'S NAME AND ADDRESS :—

14/2/66

ओमप्रकाश शर्मा

[illegible]

पिन PIN

॥ श्रीः ॥

दिनाङ्क 22/X/81
भरतपुर

सेवामें

श्रद्धेय श्री भगवान् महाराजजी के परम पावन श्रीचरणारविन्दों में साष्टाङ्ग ढोक एवं अनन्त कोटिशः जयशंकर जयशङ्कर की ज्ञात हो।

आपकी कृपा से मैं कुशल पूर्वक हूँ। परिवार में सभी कुशल हैं तथा श्री पण्डितजी एवं पं० श्री सम्पूर्णदत्तजी के यहाँ भी सभी कुशल मङ्गल में हैं।

दया दृष्टि से निहार कर मुझे क्षमा करने की कृपा करें। मैं दिनाङ्क 13-10-81 (शरद पूर्णिमा) के अवसर पर भी आकर आपके दर्शन लाभ नहीं कर सका। मैं बहुत २ क्षमा-प्रार्थी हूँ। फार्म की बुवाई तक राजकीय अवकाशों में भी अवकाश स्वीकृत नहीं किया जाता है। अतएव आप महाराजजी के दर्शनार्थ दिल्ली नहीं आ सका। आगे महाराजजी ! अवकाश होने पर मैं स्वयं आपके पास आकर दिव्यानन्द प्राप्त करूँगा।

भगवान्‌जी से प्रार्थना है कि आपका स्वास्थ्य बिल्कुल ठीक रहे और सबको सदैव ज्ञान-दीप से आलोकित करते रहें। सब पर आपकी अपनी कृपा है।

प्रस्तुत पत्र बिलम्ब से लिखने के लिये पुनः क्षमा याचना करता हूँ।

शेष आपकी कृपा है।

समस्त बच्चों, गृहणी एवं माताजी पिताजी का यथायोग्य जयशंकर व ढोक मालूम हो।

बाबूजी श्री सीतारामजी, बाबूजी श्री रतनलालजी, मास्टर सा० श्री रविजी त्रिवेदीजी एवं अन्य समस्त सज्जन वृन्दों को करबद्ध जयशंकर की मालूम हो।

सादर सेवार्पित।

आपका ही —
[signature] 22/X/81
(छोटेलाल)

यहाँ काट कर खोलिए TO OPEN CUT HERE

अन्तर्देशीय पत्र कार्ड
INLAND LETTER CARD

भरतपुर
22/10/81



सेवामें

श्री श्रीजी महाराजजी C/o श्री सीतारामजी
B66 साउथ मोतीबाग, साउथ नं० 2
नयी दिल्ली। 110021

पिन PIN

पहला मोड़ FIRST FOLD

तीसरा मोड़ THIRD FOLD

दूसरा मोड़ SECOND FOLD

इस पत्र के भीतर कुछ न रखिए NO ENCLOSURES ALLOWED

प्रेषक का नाम और पता :— SENDER'S NAME AND ADDRESS :—

22/X/81
Shri Santosh Sadan,
Mathura Gate,
Bharatpur (Raj.).

पिन PIN





चंडीगढ़,
30-9-65.

पूज्य स्वामी जी,

सादर प्रणाम।

आपकी आज्ञानुसार, मैं श्री दीनानाथ शर्मा जी के घर गया थे। उनके बड़े भाई श्री राम स्वरूप जी भी आए हुए थे। वे एक दिन पहले उनके पिता जी (पंडित जटा शंकर जी) भी चंडीगढ़ आए थे। वे सभी कुशल पूर्वक हैं। आप किसी भी तरह की चिन्ता मत करें।

पंजाब का वातावरण अभी पूर्णरूप से ठीक नहीं हुआ। बिजली आदि जलाने की पूर्णरूप से स्वतंत्रता नहीं। शेष कुशल है। मेरे योग्य सेवा लिखें।

चरणरज
मदन लाल शास्त्री

Phone : 33 Cables : "LAKSHMi"

Dr. R. C. Gupta & Co.

AUTOMOBILE & CYCLE GOODS IMPORTERS, REGISTERED, DEALERS & CONTRACTORS

Ref. No.________ BHARATPUR ९-८-५ 196८

अनन्त विभूषित श्री श्री के पदपंकजों में
दासानुदास के साष्टांग कोटिश:
दण्डवत् प्रणाम स्वीकृत हो।

कृपा पत्र मिला पढ़कर अत्यन्त हर्ष हुआ। स्वास्थ्य के बारे में जानकर कुछ खुशी हुई काफी दिनों से स्वास्थ्य की चिन्ता थी। आपकी अनुकम्पा से यहाँ पर भी सब कुशल मंगल है। श्री पंडित जी देहली जज साहब के यहाँ पर शादी में गये थे। अब वह महाराज के साथ करौली गये हैं। श्री परशुराम जयन्ती खूब धूम धाम से मनाई गई। सुबह से ही जलूस व गली गली में भगवान परशुराम की जय के नारे लगे थे। पत्र आपका आज सुबह 11 बजे मिला है। आपकी आज्ञानुसार वह कार्य आज ही से शुरू कर दिया है। एक कैंप की माला का भी इन्तजाम कर लिया है। आजकल गर्मी काफी अधिक पड़ रही है गत सोम से तो मौसम ठंडा था अब शाम को बादल भी हुए थे वर्षा नहीं हुई आज खूब [illegible] चल रही है लेकिन मान काफी अधिक है

पंडित जी के यहाँपर सब कुशल मंगल है

श्री दुर्गादत्त जी को आज पत्र लिख दिया है उसमें श्री गिरीश शरण जी को भी नमस्ते लिख दिया है

मेरे योग्य सेवा हो सो लिखें कोई लिखें

आपका
धरमानन्द शर्मा
सेवक

CABLES: "LAKHOJI"

DR. R. C. GUPTA & Co.

AUTOMOBILE & CYCLE IMPORTERS & CONTRACTORS
BHARATPUR
(INDIA)

Ref. No. ....   Date २८-१०-४८

श्रीमान मैनेजर साहब.

अयशंकर.

आगे आपका कुशल समाचार अभीतक प्राप्त नहीं हुआ है सो लिखना क्या कारण है आगे बिल्टी १ मैं इसके साथ भेज रहा हूं जिसमें पेटी व रेवड़ी श्री २०८ श्री बाबा महाराज :..........

सो इस पार्सल को सही ~~सा~~ जब मिल जाय खबर देना. माल मिलता है व नहीं. और सब कुशल पूर्वक है - पं-जटाशंकर जी ~~[illegible]~~ हमारी जय शंकर कह देना: श्री बाबा महाराज के पुज्य पादुकाओं में श्री. मेरी साष्टांग दण्डवत् स्वीकार हो -

आपका

[signature]

CABLES: "LAKHOJI"

DR. R. C. GUPTA & CO.

AUTOMOBILE & CYCLE IMPORTERS & CONTRACTORS

BHARATPUR

(INDIA)

Ref. No.

Date

श्री:| भरतपुर ता. २८-१०-४८

श्रीमान्

मैनेजर महोदय जैजै रामजी सस्नेह जय शंकर| सर्वत: कुशल मस्तु| आप जबसे पधारे हैं कोई कुशल पत्र नहीं आया है क्या कारण है शीघ्र पत्र दीजिये| लाला शिव प्रसाद जी का खरड़ से पत्र आया है कि पं० जटाशंकर जी को सूचना दे दो कि उनके यहां लड़के की शादी की पत्री आने वाली है शेष कुशल है|

मेरे पत्र में विलम्ब होने का कारण लाला लक्ष्मीचन्द जी हैं आप पधारे हैं उसके बाद जब देहली से लाला लोग यहां आये हैं पैठे की मिठाई और रेवड़ी रखी हैं किन्तु अभी तक पार्सल तैयार होकर रवाना नहीं हो रहा है इन दिनों दुकान सफाई में लगे हुए हैं तथा गिरिधर के इन्दौर चले जाने के कारण बाहर जाने का भार भी इन्हीं पर है| श्री १०८ बाबा महाराज के पुनीत पाद पद्मों में सादर कोटिश: प्रणाम निवेदन कीजिये श्री पं० जटाशंकर जी लाला चिरंजी लाल जी आदि सभी को जय शंकर [illegible] भी प्रणाम कहते थे

आशा है अब इन मानदास जी वहां नहीं होंगे
श्री स्वाध्याय के बारे में अभी तक कोई समाचार श्री
हरदेव जी का नहीं आया है।

श्री पं० मदन लाल जी ने सादर प्रणाम निवेदन करने के अनन्तर
प्रार्थना की है कि बहुत पूर्व में अर्श हुआ था वह एक चूनी से
सूख गया अब गत कई वर्ष से कुछ मवाद आता था इन दिनों यह
रोग अधिक बढ़ गया है गुदा में से किसी नस द्वारा पीब सा
आता रहता है यदि कोई औषधि उचित समझें तो बताने की
कृपा करें। शेष कुशल है। आपका - गोविन्द -

* ॐ *



M/s. Girdhari Lal Sheo Pershad,

MERCHANTS & COMMISSION AGENTS.

KHARAR. (AMBALA).

गिरधारी लाल शिव प्रशाद आढ़ती, खरड़ (अम्बाला)

तारीख 28-10-48 :

भाई जोग लिखी

खरड़ सेती ला० गिरधारी लाल शिव प्रशाद की राम २ बंचना आगे आप की चिट्ठी आई

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

Gresy Cotton Co. Ltd.
Agents.
Fort
Bombay

ॐ

जी. एस. आई. कैम्प खेतड़ी
पोस्ट: खेतड़ी नगर (झुन्झुनू)

4-1-1977.

परम पूज्य श्री स्वामी जी महाराज,

दास का आपके पवित्र चरण कमलों में प्रणाम स्वीकार हो,

अत्र कुशल तत्रास्तु। आपकी अपार कृपा से बहन सरोज जी के 2/1/77 दिन इतवार सांयकाल में बेटा हुआ है। जच्चा वा बच्चा सकुशल है। आज श्री सुभाष जी का टेलिग्राम आया है। अशवनी कुमार बेटी रमा रानी को लेकर 27/12/76 को सकुशल सोलन पहुंच गया था, अभी वह शायद पंजाब से वापस नहीं आया। उस दिन आप से मिलने के उपरान्त मैं फौजी कॉटीन के इन्चार्ज श्री बाली जी से मिला था, तथा रमा के विषय में उनसे बात की थी, उन्होंने कहा कि अभी उनका लड़के की मंगनी शादी करने का 3 साल तक कोई इरादा नहीं है, पहले वे अपनी लड़की की शादी करेंगे उसके बाद लड़के की।

मेरी आपसे हाथ जोड़कर विनती है कि आप बेटी रमा के लिये कोई सुशील वर देखें, आपके आदेशानुसार ही उसकी शादी करेंगे।

शेष सब कुशल है, हमारा सब का आपको प्रणाम, कृपया सूचित करें कि आप कब खेतड़ी तशरीफ ला रहे हैं, और दर्शन देकर कृतार्थ करें, दास के लायक सेवा लिखें, पत्र में कोई त्रुटि हो तो कृपया क्षमा करें।

आपका दास
राजकुमार शर्मा



अन्तर्देशीय पत्र कार्ड
INLAND LETTER CARD

Shri "Shriji" Maharaj C/o
Pandit Durga Dutt Ji Shastri
Bunglow No. A-72, Amrit Path
Janta Colony JAIPUR (RAJ)

पिन PIN

दूसरा मोड़ SECOND FOLD

तीसरा मोड़ THIRD FOLD

इस पत्र के भीतर कुछ न रखिए NO ENCLOSURES ALLOWED

प्रेषक का नाम और पता :— SENDER'S NAME AND ADDRESS :—

(R K SHARMA)
GSI K.C.P. (RAJ)

पिन PIN



पहला मोड़ FIRST FOLD

पंडित दुर्गादत्त जी महाराज से वा उनके परिवार
को तथा आपके शिष्यों को हमारी जयशंकर कहदे।
आपका बेटा।
राजकुमार शर्मा।

दि: 17.5.76

S-III/857
RAK Puram
New Delhi.

श्रीमान परम आदरणीय व प्रात: स्मरणीय
श्री गुरुदेव महाराज जी सादर प्रणाम।

सविनय निवेदन है कि आपकी असीम अनुकम्पा से यहां पर सब कुशल पूर्वक है। आशा है ईश्वर की कृपा से आपका स्वास्थय ठीक होगा। कल 16.5.76 को श्री सीता रामजी ने सूचना दी कि आप इस समय भरतपुर में विराजमान हैं। मैं काफी दिनों से चिन्ता में था कि आप कहाँ पर हैं। जिससे सूचना से मन को शान्ति हो। आपको बड़े दुख के साथ सूचित करता हूँ कि पिछले मास हमारे परिवार पे एक भयानक संकट आगया। मेरा छोटा भाई जो सुन्दर था उसने 2.5.76 पिछले मास गाजियाबाद प्रेम से रेल के द्वारा आत्म हत्या करली। हमें यह सूचना 5.5.76 को पुलिस द्वारा प्राप्त हुई। सारा परिवार इस भयानक दुर्घटना से घोर दुख में डूब गया। सतप्त हृदय को आपका ही अवलम्ब है। आपके श्री चरणों को हम सब प्रतिदिन याद करते हैं और प्रतीक्षा करते हैं। आगे का आपका क्या प्रोग्राम है।

आपसे विनम्र करबद्ध प्रार्थना है कि आप अपने श्री चरणों के दर्शन शीघ्र ~~[illegible]~~ कराने का अनुग्रह करें। माता जी भी इस समय यहीं हैं। सब परिवार वाले आपके श्री चरणों में अपना प्रणाम भेजते हैं।

आपके श्री चरणों का
दर्शनाभिलाषी
मायासिंह
17/5/76

आदरणीय श्री गोविन्द जी को सादर नमस्कार कहने की कृपा करें।

यहाँ काट कर खोलिए TO OPEN CUT HERE →

अन्तर्देशीय पत्र कार्ड
INLAND LETTER CARD





To श्री: श्री: महाराजजी
c/o
Shri Raj Pandit Govind Misra
राज पंडित श्री गोविन्द मिश्र जी
Chaubunja चौबुर्जा
Bharat Pur भरतपुर
RAJASTHAN राजस्थान
पिन PIN

पहला मोड़ FIRST FOLD

दूसरा मोड़ SECOND FOLD

तीसरा मोड़ THIRD FOLD

इस पत्र के भीतर कुछ न रखिए NO ENCLOSURES ALLOWED

प्रेषक का नाम और पता :— SENDER'S NAME AND ADDRESS :—



रामनाथ
S-III/857
R.K. Puram
New Delhi
पिन PIN

॥ ओं ॥

पत्र : २१

श्री पुज्य नीय महोदय गुरुदेवस्वामी जी आपके पुज्य चरणों में पुत्री कुन्तवती का बारंबार प्रणाम हो

निवेदन यह है कि मैं २६ मई को देहली पहुंच गई थी और आकर भाई शिव प्रसाद से आपजीके बारे में पूछा परन्तु शायद उनको ज्ञात ना होगा उन्होने बताया के वह भरत पुर है परन्तु मन बार बार बेचैन था हर वक्त आप जी के दर्शनों की लगन लगी रहती स्वप्न दासी को दर्शन तो देते हो परन्तु कुछ बताते नहीं कि मुझे अब क्या करना चाहिये फिर मैं एक बेचैनी में ही अस्पताल पहुंची कुछ फिरने के बाद डाक्टर जी साहिब मिले फिर आपके बारे में पता लगा और आपजी का पत्र पढ़कर मन शान्त हुआ ।

अब आपजी चरणों में फरयाद है कि वेद के पिता जी देहली में ही हैं परन्तु इस समय आ रहे हैं क्या कहूं खाने पिने में कष्ट काटना पड़ता है बच्चे दरबदर हो कर पानीपत भेज दिये वेद और वह भी परन्तु वेद का दिल ससुराल जाने को नहीं चाहता था अब आपजी से फरयाद है कि वेद के मुकदमे की तारीख अभी लगी नहीं जुलाई के बाद ही लगेगी सो आप जी की कृपादृष्टी हो तो विजय हो सकती है बाकी दुर्गा पाठ करने देहली में हमारे घर लाल कोई आता अपने घर कहते हैं कर देंगे बार बार आपसे फरयाद है तनिक कृपा करें तो मेरा बेड़ा पार हो सकता है अब आप देहली दर्शन कब देंगे पत्र का उत्तर शीघ्र देना

आपकी पुत्री कुन्तवती

हम तो खत भी किसी और के नाम
मंगाते है यहां के खत कर

पता
बी. पी. कान्सहा
c/o बही महा नन्द लैक्चरर
ऑन कामिशन अनाज
दुकान 2/22 सदर बाजार
बहादुर गढ़ रोड
देहली

पहला मोड़ first fold

अन्तर्देशीय पत्र
INLAND LETTER

इस पत्र के अन्दर कुछ न रखिए NO ENCLOSURES ALLOWED

भेजने वाले का नाम और पता :— Sender's name and address :

तीसरा मोड़ Third fold

श्री गुरु चरण कमलों में शाष्टांग प्रणाम :

शिवं तर्वन्तु शिव:

पत्र आप का मिला । आप के सकुशल पहुँचने की खबर को प्रसन्नता हुई । यहां मुहल्ले में अभी आपने पहले प्रकोप ने कुछ ही शान्त है । बांकेलाल की नौकरी छूट गई हैं । अन्य जगह तलाश हो रही है । पं. रामरतन जी को आप का संदेश पहुंचा दिया था शायद उनका पत्र भी आप को आये । कश्मीर का विचार उन का अभी प्रतीत नहीं होता । वैद्य जी का १ अगस्त को प्रणाम पहुंचा है वे अपने पहले वाले सुहृत् प्यारियों में उलझा है । रामा कलकत्ते से वापस आ गया है । राजकुमार का परिणाम अभी नहीं निकला । मेरी गाड़ी ठीक नहीं चल रही रबड़ी बहुत मांगती है । लड़के काम पूर्ण परिश्रम से करते हैं परन्तु भाग्य साथ नहीं देता । एक पक्ष तो ठीक चला अब फिर गड़बड़ हो रही है आशा है आप के शुभाशीर्वाद से सफलता मिल गई हो । आप अपने स्टेशन के कारण यदि कहीं दूसरी जगह को बदल लें तो भी लिखने की कृपा करते रहें । श्रीकान्त: वैद्य जी तथा अन्य सब बाल गोपालों की ओर से सादर प्रणाम स्वीकार हो ।

बालगोपाल बहुत याद करते हैं तथा
दिन प्रतिदिन चर्चा करते हैं

एक दुर्घटना यह हुई कि वैद्यनाथ के चोरी
हो गई और शिवरात्रि को पर श्री गदाधर जी की
कृपा से नुकसान ठीक गये केवल १०० रुपये
तथा २ तोलों का अन्य सामान चोरी हुआ।
वैसे वैद्यनाथ इस घटना से कोई घबराये नहीं
हैं अपनी आत्मध्यानी कार्यक्रम होते हैं।
उनके निवासकमरे में पूजा की चौकी है उस में जो
बाहर जाली कौरा लगी हुई है उसका एक
कोना उखाड़ कर चोर घुसे और उस दिन अंदर
के दरवाजे भी लगाना भूल गये थे"
अन्य कुशल हैं।
अशोक तथा अन्य सब बच्चों
को नमस्कार।

कृपाभिलाषी सेवक
भगवान दास:

अन्तर्देशीय पत्र
INLAND LETTER



श्री आचार्य श्री
c/o
K.K. ANAND
के के आनन्द
House of Pt. Banke Bihariji
Gagji Bag   Shiri Nagar श्रीनगर
गगजी बाग   Kashmir

पहला मोड़ First fold
दूसरा मोड़ Second fold
तीसरा मोड़ Third fold

भेजने वाले का नाम और पता :- Sender's name and address :-
२१/७/६०



इस पत्र के अन्दर कुछ न रखिये   NO ENCLOSURES ALLOWED

श्रीकेदारशर्मा
सुन्दरनगर
19.5.1977

प्रियवर शर्मा जी, नमस्कार।

आपका पत्र मिला। धन्यवाद।
वास्तव में ही आप का पता मुझे कभी
इससे पहिले मिला नहीं है। महाराज
जी का पत्र भी मिला नहीं।

पं. काशीनाथ जी का
स्वास्थ्य यथावत् विकृत ही है।
यहां की व्यस्तताओं ने समय ही
नहीं दिया कि मैं उनके यहां
मिल पाऊं। हो सकता है कि
वे कुछ समय घर से बाहिर स्वास्थ्य
लाभ कौनेवाले में चले गये
हों। आज कल तो घर
पर ही सुने जाते हैं। वे प्रायः
व्याधिजन्य मानसिक
दुर्बलताओं में फंस गये हैं।

महाराज जी को हमारा
सादर नमस्कार पहुंचावें।
मैं आप का सन्देश उन
तक पहुंचाने की शीघ्र ही
व्यवस्था कर रहा हूं।

धन्यवाद
श्रीकेदारशर्मा
सुन्दरनगर

यहां काट कर खोलिए TO OPEN CUT HERE →

अन्तर्देशीय पत्र कार्ड
INLAND LETTER CARD



To

श्री सुभाष शर्मा
दयाभवन
रेलवे लाइन के नीचे
सोलन H.P.
पिन PIN 173212

पहला मोड़ FIRST FOLD

तीसरा मोड़ THIRD FOLD

दूसरा मोड़ SECOND FOLD

इस पत्र के भीतर कुछ न रखिए NO ENCLOSURES ALLOWED

प्रेषक का नाम और पता :— SENDER'S NAME AND ADDRESS :—

प्रकाश शर्मा

पिन PIN

SOLAN

Pachhim Puri.
27/7/78.

श्री रतन लाल जी,

नमस्कार।..

आप के पत्र से पता चला कि आपने अपना Residence Change कर लिया है और जिस जगह का आप ने लिखा, उस स्थान का हम को कोई विशेष पता भी नहीं था। इसीकारण आप के पास नहीं पहुंच सके। दूसरा आप का पत्र हम को मिला भी 18/7 को नहीं।

आशा है स्वामी जी गुरुपूर्णिमा पर पहुंच गये होंगे।

आजकल स्वामी जी कहां हैं? अगर आप ही के मकान हो और जब उनको मोतीबाग जाना हो तो हम को आप सूचित करने का आवश्यक कष्ट करें। क्योंकि Moti Bagh तो काफी हमारे मकान से नजदीक पड़ जाता है और दूसरा वह स्थान देखा भी है। बच्चों के साथ जाने

में और वहां से महाराज जी के अपने
मंदिर जाने में सुविधा भी रहे गी।
शेष सब कुशल है। हम सब
की स्वामी जी को चरण स्पर्श, आप को
तथा परिवार को नमस्ते।

ओमप्रकाश आनन्द
A-3/8, Pachim Puri,
N-Delhi-110063

अन्तर्देशीय पत्र कार्ड
INLAND LETTER CARD



उत्तर दिया गया
27/7/78

MR. Rattan Lal
R.P.S. Flats, No 286- Madangir,
opp. Khanpur Depot
N-Delhi

पिन PIN

तीसरा मोड़ THIRD FOLD

इस पत्र के भीतर कुछ न रखिए NO ENCLOSURES ALLOWED

प्रेषक का नाम और पता :— SENDER'S NAME AND ADDRESS :—

O. P. Anand.
A-3/8, Pachim Puri,
N-Delhi-110063

पिन PIN

27/7/78

मैं धार्मिक समारोह मनाया जायेगा जिस
में — नामदेव जी — कीर्तन करने वाले व
भाषण देने वाले मेहमानों को बुलाया
गया है इश्तेहार छप रहे हैं — ये तीन
दिन प्रोग्राम चलता रहेगा — और भोग,
गुरु पूजा को पड़ेगा — इश्तेहार दो चार
दिनों में ही आप की सेवा में भेज दूंगा
बाकी देहली से श्री तिलकराज जी का
पत्र आया था और श्री जी का पता पूछा
था — मैंने उन को पता दे दिया है —
बाकी सब ठीक है — और जब कृपा
दृष्टि आप की है तो सब ठीक क्यों न हो
बाल हरि राम भी अब काफी ठीक है

कृपा दृष्टि बनाये रखें —

मैं सब से अनजान बालक हूँ
मुझे आता तो कुछ नहीं —

आप का
दास
भगवती
तहसील रोपड़



अन्तर्देशीय पत्र
INLAND LETTER

To
Shri ... Maharaj ji c/o Raj Sahib Solan,
Solan (Simla Hills)

भेजने वाले का नाम और पता :— Sender's name and address :—



इस पत्र के अन्दर कुछ न रखिये NO ENCLOSURES ALLOWED

३१५५

श्री गुरुवे नमः

परम पूज्य प्रातः स्मरणीय श्री जी महाराज जय शंकर
श्री श्री चरण कमलों में प्रणाम स्वीकार हो।
नालागढ़ में पता चला कि श्री जन्म उत्सव 18 7/64
का है। हम ने 19 7/64 का रखा था, आप के पत्र आने
से 18 7/64 का रखा है। इस समय जो प्रोग्राम बनाया
है। वह इस प्रकार है। नालागढ़ में श्री श्री
गुरुदेव जी महाराज जी के जन्म दिवस के उपलक्ष में
18 7/64 से 24 7/64 गुरु पूर्णिमा तक नालागढ़

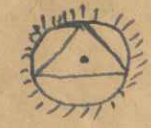
ارتھات اپنے آپ کے پرچی کا درشن گیان ←

(شری)

خود سنبھال کر رکھیں

از لدھیانہ
18.7.64

شری ست گورو مہاراج آتم رہسیہ تھا پرتھنا



(یا ہو سکتی ہے)
آکھل دشٹو لیلا میں - اِشٹ - گورو تتھا جیو یا جگیاسو یا جیو پن کی تریٹی جس کے سہارے تھا ذریعے پرکاشمان ہوتی ہے - اِسے ہی دِشٹو روپ سے پرکاشمان ہوتے ہوئے پرکاشمان دسہا جس کا سوبھاؤ ہی ہے - جسکو اپنے پرکاش کا بھی بھاتی گیان ہے - اِسی لئے جو سم دَرش ہے - میٹھی میٹھی دھوپ میں چمکتے ہوئے صبح کے سمودریہ کے سمان لالی لئے سنہری سا جس کا وَرن ارتھات روپ ہے - وہ پرم سرلیٹ کلیان کاری روپ - بندو سوروپ آتم روپ - سمپورن شکتی سموہ - یسا کار روپ دھارن کر کے چھپا کر تھا لغیر چھپائے بھگتوں کیلئے تھا پرجیو ماتر کیلئے اپنے آپ کے آنند قیمتی دَرشن ارتھات اپنے آپ کے جہاں جہاں جہاں منتر کو بھی پرکار آسان سے آسان طریقہ سے سمجھا کر اپنی آیاد کر یا کر رہے ہیں - ایسے پرم سرلیٹ کلیان کاری روپ شری ست گورو دیو کو ہر دم میں نمسکار کرتے ہوئے پرتھنا ہے کہ سدا درشن روپ ارتھات آتم روپ ہی رہیں [جفاظت]

بھائی گنگوئی پرشاد جی جے شنکر

شری ست گورو دیو جی کے جنم دن اُتسو منانے کا پروگرام پتر ملا - پتر ملنے کے اب تک کے سمے کا لک کے مطابق پتہ نہیں کیا ہو گیا ہے - کسی طرح بھی بتانا مشکل ہو گیا ہے - زیادہ سے زیادہ اتنا سا کہہ دیتا ہوں - کہ شری ست گورو دیو اس شریر کی ساری حالت سے اچھی طرح واقف ہیں جہاں اس شریر کو شری جی نے رکھا ہوا ہے یہ وہیں پر ہے - آگے جیسی اُنکی اچھیا ہو گی - ہو گا - پتر ملنے سے لیکر اب تک آنسوؤں کی دھار بدستور جاری ہے - جس کا کارن خود میری سمجھ میں نہیں آرہا - خط بھی دھار کے بہتے بہتے ہوئے مشکل سے لکھ رہا ہوں - یہ کوئی بناوٹ نہیں جو کچھ لکھا جا رہا ہے یہ سارا کچھ ٹھیک ہی ہے - آپ لوگوں کے دھنیہ بھاگ ہیں جو سمپورن پتر بھگتوں کے شیر شبھ پاور پر ہم روپ شری ست گورو دیو جی کے ساکشات درشن کرتے ہوئے تھا گن گان کرتے ہوئے الوکک آتم آنند اور شُدھ درشن کا پان کر رہے ہیں

سب پریمیوں کو جے شنکر
شری چرنوں میں پرنام

آپکا اپنا آپ

دوراہا لدھیانہ
18.7.64

تین چار دن سے ملیریا بخار چلی آ رہا ہے

Ramu

کل ہی میں نے شری بابا بسنت رام جی کو بابا جی ہری رام جی
کی صحت دریافت کرنے کیلئے خط لکھا تھا مگر جواب نہیں ملا ہے

شیام سندر دیکر کرشن گوپال

अन्तर्देशीय पत्र
INLAND LETTER



شری میاں بابو بھگوتی پرشاد جی
مقام نالہ گڑھ - تحصیل نالہ گڑھ ڈاکخانہ خاص
(ضلع انبالہ)

First fold

तीसरा मोड़ Third fold

दूसरा मोड़ Second fold

भेजने वाले का नाम और पता :- Sender's name and address :-

از دوراہا لدھیانہ

18/7/64



इस पत्र के अन्दर कुछ न रखिये NO ENCLOSURES ALLOWED

यहाँ काट कर खोलिये To open

ॐ

कोठी, कुनिहार
17.6.80

श्री जी।

जय गुरुदेव। प्रणाम। पत्र आप के दो मिले परन्तु मैं शीघ्र उत्तर न दे सका। कारण यह कि पहले तो मैं बीमार रहा तथा कुछ घरेलू झगड़ों में व्यस्त रहा। कई दफा तो बीमारी की हालत में इधर उधर चलना पड़ा जिस से स्वास्थ्य अधिक बिगड़ गया। उस के बाद योगेन्द्र बीमार पड़ गया। और आजकल योगेन्द्र की माता बुखार में कई दिनों से पड़ी है।

यदि आप अभी तक नालागढ़ न गये हों तो कुनिहार होकर ही जावें। यदि चले गये हों तो नालागढ़ से ही कुनिहार पधारने की कृपा करें। मैं यहां पर अभी तीन सप्ताह तक और ठहरूंगा। मैं आप के पास योगेन्द्र को ही भेजता परन्तु यहां पर घर का काम काज आजकल वही देखता है। यहां और कोई नहीं है। यदि आप कुनिहार पधारने की कृपा करें तो बहुत मेहरबानी होगी। यहां पर पधारने के बारे में सूचित करें।

शेष शुभ।

आपका शिष्य
सीता राम तंवर

श्री सुभाष जी।

जय शंकर। पंडित जी जो नालागढ़ चले गए हैं तो सूचित करें तथा यह पत्र उन के पास भिजवा देवें। मेहरबानी होगी।

आपका शुभाकांक्षी
सीताराम तंवर

पहला मोड़ FIRST FOLD

अन्तर्देशीय पत्र कार्ड
INLAND LETTER CARD

Redirected



श्री
C/o Pt. Hari Ram ji Sharma
[illegible]
Retd. D.C.&S.O. (A.R. Corp.)
P.O. NALAGARH (H.P.)
(Via Ropar (P.B.))

पिन PIN

तीसरा मोड़ THIRD FOLD

इस पत्र के भीतर कुछ न रखिए NO ENCLOSURES ALLOWED

प्रेषक का नाम और पता :— SENDER'S NAME AND ADDRESS :—

[illegible]

पिन PIN 173207

दूसरा मोड़ SECOND FOLD

देहली
13.7.70

पूज्यनीय स्वामी जी,

सादर प्रणाम।

आप का कृपा पत्र ६ जुलाई का मिला। आप की सकुशलता की सूचना पढ़ के अति प्रसन्न हूँ। आप के आज जन्मदिन की आप को हार्दिक बधाई कहता हूँ।

बख्शी जी को फून पर इस बारे में सूचना दे दी गई है।

आशा है कि व्यास पूर्णिमा को आप के यहाँ उत्सव होंगे। सब बच्चों और मेरी श्रीमति की ओर से प्रणाम।

जय शंकर

आप का दर्शन अभिलाषी
गिरधारी लाल गुप्त

यदि कोई सेवा का अवसर हमें दें तो बहुत प्रसन्नता होगी। अपनी टूटी फूटी हिन्दी के लिये क्षमा चाहता हूँ।

अन्तर्देशीय पत्र कार्ड
INLAND LETTER CARD



13/7/70

Swami Shri Jee
C/o Pt. Jati Shanker jee
P.O. Sohana
(District Ropar)
Punjab - (Sohana)

प्रथम मोड़ First fold

तीसरा मोड़ Third fold

दूसरा मोड़ Second fold

प्रेषक का नाम और पता :— Sender's name and address :—

P.L. Gupta
81, Rabindra Nagar,
New Delhi - 3.

इस पत्र के भीतर कुछ न रखिए NO ENCLOSURES ALLOWED

यहाँ काट कर खोलिए To open cut here

लेकिन मेरे लिये तो आप
ही है जो कुछ है क्योंकि
आप जब सिर पर हाथ
रख देते हैं तो मुझे शान्ती
हो जाती है क्योंकि यहा
तो मैं अपने को अकेला
ही महसूस करता हूं।
मेरे लायक कोई सेवा हो
तो लिखियेगा।
पत्र का उत्तर दीजियेगा
शेष कुशल

2

यहां काट कर खोलिए To open cut here

अन्तर्देशीय पत्र
INLAND LETTER



28/9/70

Shri Gobind Datt Misr
Chowburja
Bharatpur
(Regd)

पहला मोड़ first fold

तीसरा मोड़ third fold

दूसरा मोड़ second fold

भेजने वाले का नाम और पता :- Sender's name and address :-



इस पत्र के अन्दर कुछ न रखिये NO ENCLOSURES ALLOWED

Printed by:- India Offset Press, Delhi.

बरेली
२८-६-७०

श्रीमान पूज्य गुरूजी
सादर चरण स्पर्श,

सेवा मे निवेदन है कि यहां पर
सब लोग कुशल से हैं आशा करता
हूं कि वहां पर भी सब लोग कुशल
पूर्वक से होंगे।

अबकी बार राजेन्द्र फेल हो गये
हैं वह बहुत चिंतित रहता है
बहुत समझाता रहता हूं कि
जो कुछ होना था वो तो हो गया
आगे मेहनत से पढो।

आपका स्वास्थ्य कैसा चल रहा
है अब तो कोई तकलीफ नहीं
चल रही है।

आप लोगों का कब तक आने
का विचार है लिखियेगा।

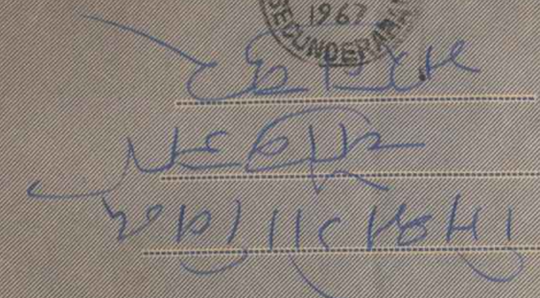
श्री पूज्य माजी व चाचीजी
का स्वास्थ्य ठीक होगा

उनको मेरा चरण स्पर्श
कहियेगा और नि. धर्मेन्द्र
को शुभ आशीष।

श्री पूज्य ज्योतिषीजी महाराज
व वेदपाठीजी का स्वास्थ्य
ठीक होगा उनको भी मेरा
चरण स्पर्श कहियेगा।

पूज्य कृपालजी रेडियो वाले
को लल्लाजी व डाक्टर
साहिब को जैरामजी की
कहना जी।

आपने मेरी ग्रह पत्रिका
नहीं देखी है उसको देखकर
लिखियेगा कैसा चल रहा
है व्यापार ठीक चलेगा
वैसे कोई बात नहीं है





श्री॰ ता॰ २७-१२-६७

अनन्त श्री सर्वतन्त्र करुणासागर भगवान
आपकी सदा जय हो। सर्वतः कुशल
मस्तु। पहले कार्ड का उत्तर तत्काल
दिया किन्तु कुशलोत्तर अद्यावधि
प्राप्त नहीं हुआ, कृपया कुशल
पत्र दें। छोटेलाल की ओर से
यह पत्र लिख रहा हूं इनके
कोटिशः प्रणाम श्रीचरणों में
स्वीकृत हों। शेष कुशल है।

गोविन्द:

यहाँ काट कर खोलिये To open cut here →